ये सावन का महीना ही है जिसमें बहिनें अपने भाईयों की कलाई पर रक्षासूत्र बाँधती हैं और यह वादा लेती हैं –''भैया मेरे राखी के बंधन को निभाना––''

मित्रो ! सावन का महीना अति पावन है। इसी माह के प्रत्येक सोमवार को शिवभक्त शिवमंदिर में जाकर पूजा अर्चना करते हैं। भारत के कई हिस्सों में सावन का मेला लगता है। दूर–दूर से शिवभक्त कांवड़ ले कर गंगा जल से अपने–अपने स्थानीय शिव मंदिर में शिव जी का जलाभिषेक करते हैं। पूरे माह कांवड़ियों की धूम बनी रहती है। कई लोग हजार–पाँच सौ किलोमीटर तक पद यात्रा करते हुए हरिद्वार, ऋषिकेश से गंगा जल भर अपने–अपने क्षेत्र में जा शिव जी का अभिषेक करतें हैं। कई सेवाभावी लोग कांवड़ियों की सुख–सुविधा के लिए बड़े–बड़े शिविर लगाते हैं, जिसमें कांवड़ियों के रुकने, विश्राम करने एवं भोजन का प्रबंध रहता है। लोग विशेषतः स्त्रियाँ सावन के सोमवार का व्रत बहुत श्रद्धा–भक्ति से करती हैं।

मनोज कुमार ''शास्त्री''
संस्कृत–हिंदी शिक्षक
(मध्य–विभाग)

आह! मन , वाह!मन

हर बार की तरह इस बार भी हमारे विद्यालय में **''मॉडल यूनाइटेड नेशन्स''** अर्थात **''मन''** का आयोजन हुआ । सच बताऊँ! यह मेरे जीवन का बहुत मज़ेदार, ज्ञानवर्धक, उत्साहजनक एवं ऊर्जा से भरा अनुभव रहा। मैंने इसमें भारत के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। मैं इसकी **''रासायनिक हथियारों को समाप्त कर प्रतिबंधित करने वाले संगठन''** की कमेटी में था। मैंने इस कमेटी में भारत का रुख स्पष्ट करते हुए रासायनिक हथियारों को समाप्त करने के भारत की प्रतिबद्धता को बताया, मैंने कमेटी को बताया कि भारत ने अपने सारे रासायनिक हथियार 2009 तक समाप्त कर दिए थे। हमारा विद्यालय इस आयोजन को 2014 से नियमित रूप से प्रतिवर्ष कर रहा है।

इस बार इस आयोजन में पूरे भारत से **11 विद्यालयों**– बिरला पब्लिक स्कूल, पिलानी, बिरला स्कूल पिलानी, बिरला बालिका विद्यापीठ,पिलानी, बिरला शिशु विहार, पिलानी, बिरला इंटरनेशनल स्कूल, किशनगढ़, मोदी स्कूल ,लक्ष्मणगढ़, एम0जी0डी0 गर्ल्स स्कूल, जयपुर, डेली कॉलेज, इंदौर, एमरल्ड हाइट्स, इंदौर, लॉरेंस स्कूल , सनावर, सिंधिया कन्या विद्यालय, ग्वालियर ने भाग लिया। इसमें लगभग **250 प्रतिभागियों** ने भाग लिया।

श्री अनिल सैनी, श्री कुमार विनायक, सेकेट्री जनरल थे। इसमें मुझे सबसे अच्छा अनुभव हुआ कि इस आयोजन से मेरे जैसे अन्य छात्रों को **अंतर्राष्ट्रीय विषयों एवं कूटनीति की समझ मिलती है ।** मुझे विषय को समझ उसके बारे में अन्वेषण कर तैयारी के साथ सबके सामने प्रस्तुत करने का बहुत अच्छा अनुभव मिला। इससे मेरे आत्मविश्वास एवं समझ में वृद्धि हुई। इसमें तमाम अलग–अलग विद्यालयों के छात्रों से अलग–अलग विषयों पर चर्चा हुई, बहुत सारी नयी बातें सीखने और जानने को मिलीं। मैंनें उनसे उनके विद्यालय एवं शहर के बारे में, वहाँ के रहन–सहन के बारे में, उनके यहाँ शैक्षणिक वातावरण, सह शैक्षणिक गतिविधियों के बारे में जाना तथा उनको अपने विद्यालय एवं नगर की विशेषतायें भी बतायीं। मैने गत वर्ष भी ''प्रतिदर्श संयुक्त राष्ट्र संघ'' में भाग लिया था। वह मेरा पहला अनुभव था। उसी अनुभव के आधार पर ही इस बार मैं बहुत आत्मविश्वास से अपने दायित्व को पूरा कर पाया। हाँ इसकी लगभग महीने भर तैयारी करने में थोड़ा पढ़ाई पर अंतर आया है पर इससे मिले आत्मविश्वास से मैं वह भरपाई कर लूँगा। अब तो बस इतना ही कहूँगा– आह! मन , वाह! मन।

उत्कर्श मिश्र
नवीं–'जी

संपादक मंडल

मुख्य संरक्षक – प्रधानाचार्य बी.पी.एस.
प्रकाशन – डॉ अभिनव शुक्ल मुख्याध्यापक, मध्य–विभाग एवं कार्यकारी बर्सर
मुख्य संपादक – श्री अतुल कुमार मिश्र
छात्र संपादक . उत्कर्श मिश्र एवं सिद्धार्थ कुमार
तकनीकी सहयोग – श्री अनिल बरार
रेखांकन . श्रीमती अश्विनी केदार , छात्र– केशव मित्तल एवं ईशान सोलंकी

संपर्क सूत्र . विद्या निकेतन, बिड़ला पब्लिक स्कूल, पिलानी – 333031 सुझाव – **hmmiddle@bpspilani.edu.in**

वार्ताकार

अगस्त 2017

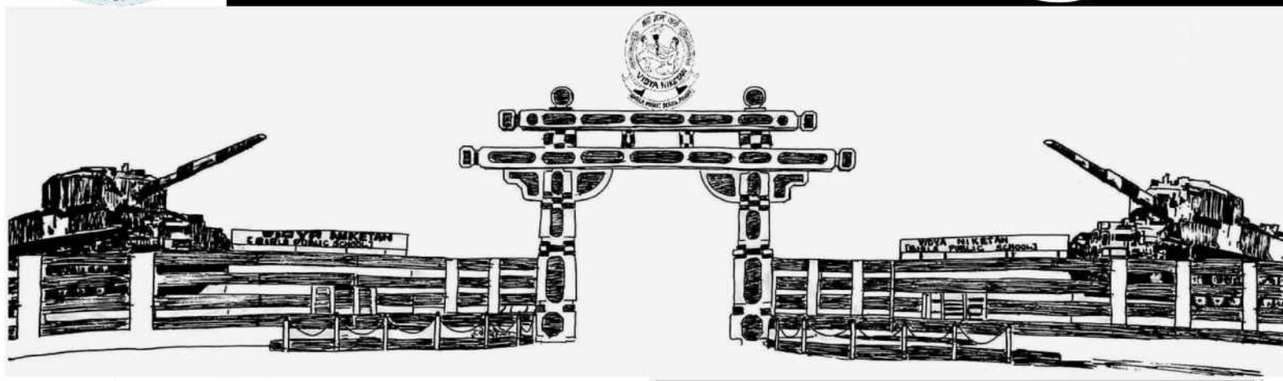

संपादकीय

अगस्त माह भारतीय इतिहास का अति महत्वपूर्ण माह है। हजारों हजार बलिदानों से प्राप्त पूर्ण स्वतंत्रता। यह स्वतंत्रता है, अतंत्रता नहीं। तात्पर्य स्व का तंत्र, कहना चाहिए स्वनियंत्रण, अनियंत्रित नहीं। आजादी बिना जिम्मेदारी के अराजक होती है, यानी जितनी आजादी उतनी ही जिम्मेदारी। कोई भी देश जिम्मेदार नागरिकों के बिना उन्नत नहीं होता, महान नहीं होता। ये हमारा दायित्व है कि हम अपने देश को महान बनायें, एक जिम्मेदार नागरिक बनें। इसके बीज छात्रावस्था से ही पड़ते हैं। विद्यालयों का दायित्व केवल पढ़े–लिखे युवा बनाना ही नहीं वरन् उन्हें श्रेष्ठ दायित्व पूर्ण कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बनाना भी है। हमें संतोष है कि हम सतत् इस दिशा में प्रयत्नशील हैं। अभिव्यक्ति को आकार देना उसी मार्ग पर बढ़ता एक कदम है। विद्यालय पत्रिका कई वर्षों से लगातार यह कार्य कर रही है। लेकिन अभिव्यक्ति की इस प्रक्रिया को और अधिक गति, और अधिक ऊर्जा प्रदान करने के लिए एक मासिक की आवश्यकता महसूस की गई और इस तरह मध्य–विभाग के मासिक पत्र ''वार्ताकार'' ने आकार ग्रहण किया। इसी कड़ी में अगस्त माह का ये अंक अपने नये कलेवर में आपके सम्मुख है

.....

उपलब्धियाँ

- 5 अगस्त को विद्यालय के लोटस सभागार में अंतर्विद्यालयीय संस्कृत श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता आयोजित हुई। इसमें 18 विद्यालयों के 33 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि मे0ज0(रिटा0) एस0एस0नायर, अति विशिष्ट सेवा मेडल, निदेशक, बी0ई0टी0 एवं अध्यक्ष प्रो0 के0के0 मिश्र, पूर्व निदेशक राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान थे। प्रतियोगिता के निर्णायक द्वय– डॉ0 ऋषि राज पाठक एवं श्री मुनिराज पाठक थे। इसमें अभिज्ञान शाकुंतलम्, रघुवंशम्, कुमार संभवम्, मेघदूतम्, नीति शतकम् से श्लोक लिए गए थे, इस प्रतियोगिता की विशिष्टता थी कि किसी भी श्लोक का दोहराव नहीं हुआ। कनिष्ठ वर्ग में पांशुल अग्रवाल, वरिष्ठ वर्ग में प्रत्यूष रंजन, बिरला पब्लिक स्कूल प्रथम स्थान पर रहे। प्रतियोगिता के संयोजक डा0 अभिनव शुक्ल, प्रधानाध्यापक मध्य–विभाग थे।
- 6 अगस्त को रक्षा बंधन के उपलक्ष्य में अंतर्सदनीय राखी निर्माण प्रतियोगिता करायी गई, जिसमें छात्रों ने अपने पास उपलब्ध अनुपयोगी सामान से राखियाँ बनायीं। प्रत्येक सदन से दस प्रविष्टियां स्वीकारी गई। जिसमें छात्र प्रणव मणीकांत, अमन एवं निशांत बंसल क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय रहे। इसके अतिरिक्त किसी भी कार्टून चरित्र पर पोस्टर बनाने की प्रतियोगिता हुई, जिसमें केशव मित्तल, हार्दिक साही एवं विनायक श्रीवास्तव क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे।
- 7 अगस्त को रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में गोधूलि का आयोजन किया गया, जिसका संचालन छात्र सिद्धार्थ कुमार ने किया। महावीर सदन से छात्र रोशन कुमार, युवराज, विवेकानंद सदन से माधव, दयानंद सदन से युवांश नेगी, गुरुनानक सदन से राजवर्धन, बुद्ध सदन से वरुण ने रक्षाबंधन पर विचार व्यक्त किए एवं श्री अतुल कुमार मिश्र ने रक्षा बंधन पर्व के महत्त्व एवं प्रासंगिकता को स्पष्ट किया। डा0 अभिनव शुक्ल ने आशीर्वचन दिया।
- 13 अगस्त को स्पिक मैके के तत्वावधान में विजय सभागार, में विदुषी सुचिश्मिता एवं विदुषी देवोप्रिया चटर्जी का बांसुरी वादन हुआ। तबले पर संगत किया पं0 मिथिलेश झा ने। कार्यक्रम में मध्य–विभाग के कक्षा आठ एवं नौ के छात्रों एवं शिक्षकों ने बांसुरी वादन को जाना–समझा और इसका आनंद लिया।
- 15 अगस्त को सदनवार अलग–अलग प्रतियोगितायें करायी गईं। महावीर सदन में स्वतंत्रता दिवस पर पोस्टर बनाए गए, दयानंद सदन में देशभक्ति की कवितायें लिखी गईं, गुरुनानक सदन में नृत्य एवं गायन हुआ, विवेकानंद सदन में पोस्टर बनाना एवं शतरंज हुआ एवं बुद्ध सदन में कैरम, शतरंज की प्रतियोगितायें हुयीं।
- 17 से 22 अगस्त तक मध्य–विभाग की अंतर्सदनीय हैंडबॉल प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। जिसमें दयानंद सदन प्रथम, विवेकानंद सदन द्वितीय एवं बुद्ध सदन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया ।

साहित्यिकी

यह है हिंदुस्तान

यहाँ है खुशहाली
चहुँ ओर फैली हरियाली
यहीं से बंटता ज्ञान
यह है हिंदुस्तान।।
यहाँ सबमें है उमंग
यहाँ फैली कला की तरंग
हमको इस पर है अभिमान
यह है हिंदुस्तान।।

यहाँ सबमें भाईचारा
यह देश सबसे न्यारा
यहाँ इंसानियत का मान
यह है हिंदुस्तान।।

गीता का ज्ञान इसका मर्म
यहाँ करते हैं सद्कर्म
सारा विश्व करे सम्मान
यह है हिंदुस्तान।।

राज वर्धन सिंह
आठवीं–'अ'

हम भारतवासी

हम सबका यह गौरव है
हम भारत के वासी हैं
भारत माता जननी हैं
वेदों और पुराणों की
यह आर्य–द्रविड़ सबका है
इस देश में रहता हर तबका है
सभी यहाँ के निवासी हैं
हम सब भारतवासी हैं।

सिकंदर पोरस से हारा था
चाणक्य ने इसे उबारा था
कुरुक्षेत्र की भूमि अभी भी है
धर्म से जहाँ अधर्म हारा था
चंद्रगुप्त, पृथ्वीराज, राणा प्रताप
वीर शिवाजी न्यारा था
स्वतंत्रता के लिये लड़े ये
जय भवानी का नारा था
वीर भूमि यह, वीर हर भारतवासी है
हम सब भारतवासी हैं।।

आयुश सिंह बघेल
आठवीं–''ब''

बादल गरजे

काले बादलों का बनने लगा है घेरा
पंछी बचाने में लग रहे अपना बसेरा
भाग रहे जानवर सारे इधर–उधर
पता नहीं चल रहा जायेंगे किधर।।

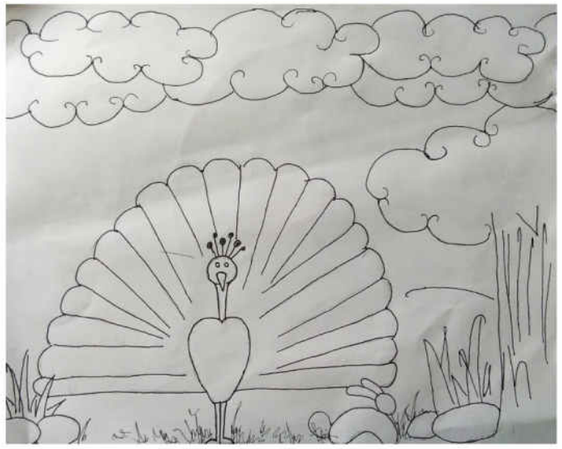

बादलों ने शुरू कर दिया गरजना
मोरों ने गा–गा शुरू किया नाचना
बड़े–बुजुर्गों ने खोला अपना छाता
हर एक बच्चा देखो नाव है बनाता।।

बूँद–बूँद कर लगी है बरसने
सर पर हाथ रख लोग लगे भागने
दिख नहीं रहा कहीं कोई भी
भाग रहे शरण में सब ही।।

चल रही गाड़ियाँ, उड़ा रहा पानी
हो रही लोगों के बीच कहा–सुनी
दिख रहा चारों ओर जल ही जल
ऐसा लगता है फिर ये बरसेगा कल।।

आदित्य अग्रवाल
नवीं–''स''

ये राह के पत्थर

मंजिल का ख्वाब लिए
उत्साहित मन से चलते जाते
सब अपने–अपने जीवन में
इक राह को है अपनाते
नज़रें टिकाये आसमान पर
वे बस चलते ही जाते
राह के पत्थर उनकी नज़रों को
नज़र न आते

ये राहें छलती हैं
पल–पल परीक्षा लेती हैं
जो भटका, औरों को भटका जाता
मंज़िल पथ को धुंधला जाता
रक्त सने तलवों की हँसी उड़ा जाता
भटके राही को केवल उनका हौसला
मंज़िल तक पहुँचा पाता

मुश्किल है सहज ही सही राह पाना
साँसों की माला बिखरा देते राह के पत्थर
मन को भ्रमित कर उलझा देते
आशा के ताने–बाने छितरा देते राह के पत्थर

कौन किधर पग धारेगा, इसका गुमान है
हर राही के इंतज़ार में अडिग पड़े राह के पत्थर
ठोकर खाकर, साहस खोकर चल पड़ते जो
अनगिन पगचिह्न बना जाते, राहों में चल कर

जो मंज़िल को पा जाता
पग की हर पीड़ा को
हँस कर जो सह जाता
वही मुसाफिर इन राहों का
सच्चा रहगुज़र बन जाता

सुश्री कुशाग्रा भाटी
विज्ञान–शिक्षिका

पड़ गए सावन के झूले

''पड़ गए झूले सावन ऋतु आयी रे , पड़ गए झूले ––––'' जी हाँ सही पढ़ा आपने। पावस में झूलों की बहार से बाला–वृद्धा कोई भी अछूती नहीं रह पाती। इस ऋतु में प्रेयसी अपने प्रिय को पुकारती है––''सावन के झूले पड़े, तुम चले आओ , तुम चले आओ।

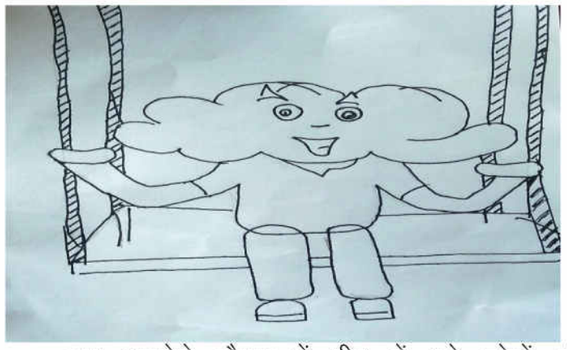

इस अलबेले मौसम में प्रीत में पगे जोड़ों की नोक–झोंक अजब रसीला रूप ले लेती है। सावन की हरियाली–तीज भारत–भर में बड़े उत्साह से मनायी जाती है। इस समय सब सखी–सहेलियाँ झूलों पर पेंग भरती कजरी, सावन, झूला जैसे लोकगीतों की झड़ी लगा देतीं हैं। सुप्रसिद्ध सुगम संगीत गायक मुकेश का गाया यह गीत–''सावन का महीना, पवन करे सोर , जियरा झूमें ऐसे जैसे बन मा नाचे मोर ––––''
किस सहृदय को झूमने को बाध्य न कर देगा।